EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्
Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapna Avam Sanchalanal Adhyadesh) 2020

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	शिक्षण अभ्यास एवं शाला इंटर्नशिप (Teaching Practice and School Internship)	L	T	P	C
DELED20Y212		0	0	20	20
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

(व्यावहारिक–6)

शिक्षण अभ्यास के अंतर्गत शाला आधारित गतिविधियों के प्रारूप की रचना की जाती है ताकि छात्राध्यापक (Student-Teacher) सैद्धांतिक विषयों से व्यावहारिक रूप से जुड़ सके तथा उसे शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के परिप्रेक्ष्य में मदद मिल सकें और प्राप्त पूर्व ज्ञान और अभ्यासों की क्रमबद्ध संरचना उनके शिक्षण को प्रभावशाली रूप से सक्षम बना सकें। शाला इंटर्नशिप के दौरान छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे अपने मेंटर्स/सहपाठियों की कक्षा शिक्षण प्रक्रिया का अवलोकन करे जिससे उनमें छात्रों के व्यवहार, अनुदेशात्मक अभ्यास, छात्र अधिगम वातावरण और कक्षा प्रबंधन के प्रति अंतःदृष्टि का विकास हो सके। छात्राध्यापकों से आशा की जाती है कि वे अभ्यास के दौरान समालोचनात्मक चिंतन एवं विचार विमर्श करे और अपने को शाला के अभिलेखों के रख–रखाव, पाठ योजनाओं के निर्माण, इकाई योजना के निर्माण, तकनीकी (ICT) का उपयोग करते हुए कक्षा प्रबंधन, शाला–समुदाय–पालक के हस्तक्षेपों से संबंधित गतिविधियों में संलग्न रखकर स्वयं के विकास एवं शिक्षण अभ्यास के व्यावसायीकरण पर चिंतन करें।शाला आधारित गतिविधियों के अंतर्गत इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान किया जाने वाला अन्य प्रमुख कार्य पाठ योजनाओं एवं इकाई योजनाओं का प्रस्तुतीकरण है जिसके लिए प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में अलग से निर्दिष्ट किया गया है। इंटर्नशिप अवधि के दौरान की गई समस्त गतिविधियों को पोर्टफोलियो एवं रिफ्लेटिव जर्नल में प्रस्तुत किया जायेगा। छात्राध्यापकों से यह आशा की जाती है कि वे इंटर्नशिप के दौरान अपने द्वारा की गई समस्त गतिविधियों के अनुभवों का, अवलोकनों का एवं निष्कर्षों का रिकार्ड संधारित करेगें। रिफ्लेटिव जर्नल में की गई प्रविष्ठियाँ विश्लेषणात्मक होनी चाहिए जैसे– पूर्व समझ के आधार पर क्या नया और भिन्न है, क्यों
उसके द्वारा निर्देशों के आधार पर किये गये कुछ अवलोकन, कक्षा प्रबंधन, शिक्षक पालक संघ से समानता या भिन्नता रखते हैं। ये अवलोकन कैसे आलोचना पर आधारित होना चाहिए जिससे उसके अभ्यास में परिवर्तन आ सके। प्रत्येक छात्राध्यापक (इंटर्न) का आकलन उसके द्वारा बनाये गये पोर्टफोलियो एवं रिफ्लेटिव जर्नल में की गई प्रविष्ठि के आधार पर किया जायेगा।शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापक को यह अवसर उपलब्ध कराना है कि अभ्यासकर्ता के रूप में उसे अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव प्राप्त हो सके। इस धारणा के आधार पर शाला इंटर्नशिप की योजना इस प्रकार बनाई जाए जिसमें शाला तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के मध्य भागीदारी (Partnership) हो सके। छात्राध्यापक को शालेय गतिविधि में एक नियमित शिक्षक की तरह सक्रिय भागीदारी करते हुए स्वयं को शाला के सभी कार्यों से जोड़ना चाहिए परन्तु इसके साथ यह प्रावधान भी होना चाहिए कि एक अभ्यासकर्ता के रूप में उसकी भूमिका रचनात्मक हो। इंटर्नशिप शाला के द्वारा उसे आवश्यक भौतिक स्थान के साथ–साथ नवाचार हेतु शैक्षणिक स्वतंत्रता भी दी जानी चाहिए। यह आवश्यक है कि प्रस्तावित पार्टनरशिप मॉडल द्वारा इंटर्नशिप शाला को भी प्राप्त होने वाले लाभों पर ध्यान केंद्रित करते हुए चयनित किया जाए।यह कार्यक्रम पूर्णतः क्षेत्र आधारित है, इसमें छात्राध्यापकों को सीधे समस्याओं से जूझते हुए सीखने का अनुभव मिलेगा। इंटर्नशिप कार्यक्रम के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए छात्राध्यापकों को एक चिंतनशील शिक्षक के रूप में ज्ञान के आधार पर बच्चों से जुड़ने, बच्चों के प्रति उसकी समझ और कक्षागत प्रक्रिया, सैद्धांतिक शैक्षणिक विचारों, रणनीतियों एवं कौशलों को क्रम से विकसित करने की आवश्यकता होगी तभी छात्राध्यापक को कक्षा में पढ़े गए सैद्धांतिक विचारों को शाला में परखने के अवसर मिलेंगे। शाला इंटर्नशिप एक द्विवर्षीय कार्यक्रम है। प्रत्येक वर्ष में छात्राध्यापकों से अलग– अलग अपेक्षाऐं हैं। प्रथम वर्ष में छात्राध्यापक का परिचय शाला से, शाला के वातावरण से, बच्चों को समझने से तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को समझने से होगा। द्वितीय वर्ष में छात्राध्यापक एक नियमित शिक्षक की भांति कार्य करेगा। यहाँ शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के अकादमिक सुपरवाइजर संवाद और चर्चा के आधार पर मार्गदर्शन और फीडबैक देकर उसकी सहायता करेंगे।

विशिष्ट उद्देश्य (Specific Objectives)

- ☐ शाला के अनुभवों को पूर्णता से प्राप्त करने के लिए कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त शालेय गतिविधियों और अभिभावकों के साथ बातचीत करने के अवसर प्रदान करना।
- ☐ छात्रों की विविध आवश्यकताओं एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले विभिन्न संदर्भों को ध्यान में रखते हुए उचित योजना का निर्माण कर एक नियमित शिक्षक की भूमिका को आत्मसात (ग्रहण) करना।
- ☐ वर्तमान प्रणाली की सीमाओं के अन्दर रहते हुए नवाचार करने की क्षमता को विकसित करना।
- ☐ कक्षा में अर्थपूर्ण गतिविधियों को सिखाने के लिए गतिविधियों का उचित चयन एवं क्रियान्वयन करना।
- ☐ अपने विद्यालयीन अनुभवों पर समालोचनात्मक चिंतन करना और इसका रिकार्ड रखना।
- ☐ केवल उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय बच्चों के सीखने के विभिन्न पहलुओं का आकलन करना।
- ☐ कक्षा 6 से 8 तक के बच्चों के शाला विषयों के शिक्षण में सहभागिता करना।

इन उद्देश्यों के अनुसार कार्यक्रम में निम्नलिखित अधिभार के घटकों की आवश्यकता होती है।

- ☐ योजना – 30:
- ☐ शिक्षण – 30:
- ☐ चिन्तनशील जर्नल एवं रिकार्ड रखरखाव – 40:

शाला इन्टर्नशिप कार्यक्रम में छात्राध्यापक को नवाचारी शिक्षण पद्धति के केन्द्र एवं नवाचारी अधिगम के केन्द्र को समाहित करते हुए भ्रमण करना चाहिये। जहाँ तक संभव हो कक्षा आधारित शोध परियोजनाओं को लेना चाहिये। इंटर्नशिप शालाओं में संसाधनों को विकसित कर संधारित करना चाहिये।

शाला इंटर्नशिप में शिक्षण अभ्यास के दौरान प्रति विषय 4 इकाई योजना से अधिक शामिल नहीं करें। इकाई की योजना बनाते समय शाला की पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त विविध स्त्रोतों से प्राप्त सामग्री की समालोचनात्मक संलग्नता को शामिल करते हुए संगठित कर प्रस्तुतिकरण किया जाये। प्रश्नों को विशेष रूप से इस प्रकार तैयार करें कि–

अ) विद्यार्थी के ज्ञान और समझ का आकलन कर सकें।

ब) अर्थपूर्ण कक्षा निर्माण और आगे की ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया कर सकें।

स) छात्र अधिगम का आकलन करते हुए शिक्षण शास्त्रिय अभ्यास में सुधार कर आगे अधिगम को बढ़ा सकें।

छात्राध्यापक (इंटर्न) को सामान्य तथा विषयवार पर्यवेक्षण के लिए संकाय सदस्यों के पर्यवेक्षी समर्थन (सुपरवाइजरी सपोर्ट) की आवश्यकता होगी। ये विषय विशेषज्ञ इंटर्न का आकलन भी करेंगे। उचित गतिविधियों का चयन करते हुए इंटर्न को इकाई योजना का निर्माण करना चाहिये। इन योजनाओं का रिकार्ड संधारित करना होगा। प्रत्येक इंटर्न से आशा की जाती है कि वे नियमित रिफ्लेक्टीव जर्नल संधारित करे, जिसमें वे अपने अभ्यास के अनुभवों पर प्रतिक्रिया देने तथा शिक्षणशास्त्र एवं अध्ययन किये गये सैद्धांतिक विषयों के बीच संबंध (linkage) बना सके।

द्वितीय वर्ष

इंटर्नशिप उन कक्षाओं के अवलोकन से प्रांरभ होगी जहाँ इंटर्न को पढ़ाने जाना है। अवलोकन छात्रों की रूचि, आवश्यकताओं एवं स्तरों के साथ–साथ कक्षा के अभ्यास और उपयोग की गयी सामग्रियों का किया जाना है। सुपरवाईज़र के साथ चर्चा तथा जर्नल का अभिलेखीकरण अधिगम प्रक्रिया का आवश्यक अंग है। इन अवलोकनों के आधार पर तथा रचनावाद पर आधारित कुछ अवधारणाओं का उपयोग करते हुये योजना बनायें। सभी विद्यार्थियों के लिए अधिगम उद्देश्यों का स्पष्ट निर्माण करें साथ ही किस प्रकार अधिगम को संगठित किया जायेगा इसका विस्तृत वर्णन करें जैसे– चर्चा का तरीका, छोटे समूह या व्यक्तिगत कार्य। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी स्व–अधिगम के माध्यम से आकलन करते हुये सम्मिलित रहते है।

लोकतांत्रिक नीतियों का निर्माण किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी की स्वायत्ता बढ़ती है और सभी विद्यार्थियों के साथ सम्मान और निष्पक्षता का व्यवहार होता है।

सुपरवाईज़र इन क्षेत्रों पर अपना फिडबैक दे।

- ☐ इंटर्न के ज्ञान का आधार।
- ☐ जीवन के अनुभव पर आधारित विद्यार्थियों के पूर्ण ज्ञान से संबंधित सटीक प्रश्नों को पूछना।
- ☐ विभिन्न आवश्यकताओं के आधार पर उचित अनुदेशात्मक रणनीतियों पर प्रतिक्रिया करना।
- ☐ सभी विद्यार्थियों को अधिगम अनुभव की इस प्रकार सुविधा देना जिससे उनमें समालोचनात्मक चितंन, चयन और अंतः क्रिया को बढ़ावा मिले और

द्वितीय वर्ष

इंटर्नशिप उन कक्षाओं के अवलोकन से प्रांरभ होगी जहाँ इंटर्न को पढ़ाने जाना है। अवलोकन छात्रों की रूचि, आवश्यकताओं एवं स्तरों के साथ–साथ कक्षा के अभ्यास और उपयोग की गयी सामग्रियों का किया जाना है। सुपरवाईज़र के साथ चर्चा तथा जर्नल का अभिलेखीकरण अधिगम प्रक्रिया का आवश्यक अंग है। इन अवलोकनों के आधार पर तथा रचनावाद पर आधारित कुछ अवधारणाओं का उपयोग करते हुये योजना बनायें। सभी विद्यार्थियों के लिए अधिगम उद्देश्यों का स्पष्ट निर्माण करें साथ ही किस प्रकार अधिगम को संगठित किया जायेगा इसका विस्तृत वर्णन करें जैसे– चर्चा का तरीका, छोटे समूह या व्यक्तिगत कार्य। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी स्व–अधिगम के माध्यम से आकलन करते हुये सम्मिलित रहते है।लोकतांत्रिक नीतियों का निर्माण किया जाना चाहिये जिससे विद्यार्थी की स्वायत्ता बढ़ती है और सभी विद्यार्थियों के साथ सम्मान और निष्पक्षता का व्यवहार होता है।

सुपरवाईज़र इन क्षेत्रों पर अपना फिडबैक दे।

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्
Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapna Avam Sanchalanal Adhyadesh, 2020)

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	रचनात्मक नाटक,ललित कला और शिक्षा Creative Drama,Fine Art and Educaion	L	T	P	C
DELED20Y210		0	0	2	2
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

(व्यावहारिक–5)

- दृश्य श्रव्य कला (लोकसंगीत, सुगम संगीत आदि)
- लोकनाटक, लोकनृत्य

उच्च प्राथमिक के लिये सूची(किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. काष्ठ का कार्य
2. उद्योग में शुरुआत (आंत्रप्रेन्योर) स्वयं का व्यवसाय
3. उद्यमी और राष्ट्रीय विकास
4. आर्थिक विकास में भूमिका
5. उत्कृष्टता एवं उपलब्धि
6. प्रदर्शनी और प्रदर्शन
7. अभिलेखों का रखरखाव

School of Education & Library Science

SYLLABUS II year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	बच्चों का शारीरिक, भावनात्मक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य शिक्षा **Children's Physical, Emotional Health and Health Education**	L	T	P	C
DELED20Y211		0	0	2	2
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

(व्यावहारिक–6)

1. बच्चों का शारीरिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य, शालेय स्वास्थ्य शिक्षा

☐ स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारणा, व्यवहार परिवर्तन प्रादर्श बनाम स्वास्थ्य प्रसार उपागम का तार्किक अध्ययन।

☐ स्वास्थ्य शिक्षा उपागम की केस स्टडी– उदा.– एकलव्य, म.प्र. एफ.आर.सी.एचमहाराष्ट्र, शालेय स्वास्थ्य शिक्षा का कार्यक्रम, स्वामी विवेकानंद युवा आंदोलन, कर्नाटक आदि।

☐ शालेय स्वास्थ्य पाठ्यक्रम का क्षेत्र – सी.बी.एस.ई., अन्य विषय संबंधी रूपरेखा – (उदा. एकलव्य, एस.एच.ई.पी., एफ.आर.सी.एच., यूनीसेफ

2. स्वास्थ्य शिक्षा हेतु ज्ञान एवं कौशल विकास

☐ भोजन एवं पोषण

☐ संक्रामक रोग

☐ स्वयं के शरीर का ज्ञान– स्वास्थ्य एवं उपचार संबंधी वैकल्पिक तंत्र

☐ प्राथमिक उपचार (कार्यशाला पद्धति)

☐ बाल शोषण :– (इस संदर्भ में शोषण के संदर्भित अर्थ, विभिन्न प्रकार एवं प्रभाव, कानूनी प्रावधान की जानकारी । इस बिन्दु के अंतर्गत शारीरिक दण्ड एवं बाल यौन उत्पीडन की जानकारी भी है।

3. भावनात्मक स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताएँ, विभिन्नताएँ एवं समायोजन

☐ भावनात्मक स्वास्थ्य की समझः आत्मावलोकन

☐ भावनात्मक स्वास्थ्य, शारीरिक स्वास्थ्य का ज्ञानात्मक संबंध

☐ शालेय कार्यप्रणाली एवं इसका बाल भावनात्मक स्वास्थ्य पर प्रभाव।

☐ कक्षा में विभिन्नता– भिन्न–भिन्न अधिगमकर्ता, भिन्न–भिन्न आवश्यकताएँ एवं समावेशन का सिद्धान्त ।

☐ अधिगम अशक्तता एवं कक्षा में सहभागिता।

4. शारीरिक शिक्षा– स्वास्थ्य एवं शिक्षा का अभिन्न अंग। संस्थान में मूलभूत व्यायाम, पी.टी. एवं समूह खेल (जैसे– खोखो, कबड्डी, फुटबॉल) का आयोजन एवं सहभागिता।

उच्च प्राथमिक के लिये सूची(किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. काष्ठ का कार्य
2. उद्योग में शुरुआत (आंत्रप्रेन्योर) स्वयं का व्यवसाय
3. उद्यमी और राष्ट्रीय विकास
4. आर्थिक विकास में भूमिका
5. उत्कृष्टता एवं उपलब्धि
6. प्रदर्शनी और प्रदर्शन
7. अभिलेखों का रखरखाव

EKLAVYA UNIVERSITY

ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

Estd by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapna Avam Sanchalana) Adhiyadesh 2020

School of Education & Library Science

SYLLABUS III year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	कार्य और शिक्षा **Work And Education**	L	T	P	C
DELED20Y209		0	0	3	3
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

(व्यावहारिक–4)

अनिवार्य क्रियाएँ

बागवानी

चित्रकला

वैकल्पिक क्रियाएँ

बागवानी

- भूमि एवं गमलों की तैयारी, साफ–सफाई, समतलीकरण, गड्ढे तैयार करना एवं भरना।
- पौधों एवं बीजों का रोपण।
- खाद एवं उर्वरक तथा उनके अनुप्रयोग।
- वृक्षारोपण की योजना बनाना।
- कटिंग, दाब कलम एवं गूटी द्वारा पौधे तैयार करना।
- पौधों की सुरक्षा।
- पौधों की देखभाल सिंचाई, कटाई, छँटाई आदि।
- किचन गार्डन।
- संस्थान में गार्डन की तैयारी निर्माण

चित्रकला

- सीधे दृश्य सामग्री के अवलोकन द्वारा
- स्वतंत्र अभिव्यक्ति के द्वारा
- खोज के द्वारा
- मॉडलिंग के द्वारा
- समूह कार्य के द्वारा
- प्रदर्शनी के द्वारा

वैकल्पिक क्रियाएं (प्रथमिक स्तर से 2 तथा उच्च प्राथमिक स्तर से 2 चयन करेंगे)

विषय प्राथमिक स्तर के लिये कार्यों की सूची– (किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. कागज कला
2. खिलौना निर्माण
3. कक्ष सज्जा
4. दुकान व्यवस्थापन
5. बाजार प्रक्रिया
6. घरेलू व्यावसायिक गतिविधियाँ
7. हम हमारी आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते हैं।
8. व्यावसायिक गतिविधियों में ईमानदारी
9. ललित कला और व्यवसाय
10. खेती एवं व्यवसाय
11. रोजगार
12. बुक बाइंडिग
13. आभूषण तैयार करना
14. ग्रामीण क्षेत्रों के व्यवसाय
15. कपड़े सिलना
16. घर में बचत एवं खर्च

उच्च प्राथमिक के लिये सूची(किसी दो कार्य का चयन करते हुये, उस पर कार्य करते हुये रिपोर्ट बनाना)

1. काष्ठ का कार्य
2. उद्योग में शुरुआत (आंत्रप्रेन्योर) स्वयं का व्यवसाय
3. उद्यमी और राष्ट्रीय विकास
4. आर्थिक विकास में भूमिका
5. उत्कृष्टता एवं उपलब्धि
6. प्रदर्शनी और प्रदर्शन
7. अभिलेखों का रखरखाव

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education

Course Code	विज्ञान शिक्षण Pedagogy of Science	L	T	P	C
DELED20Y208d		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओं की समझ का विकास कर, गलत धारणाओं को चुनौती देने हेतु तैयार करना है एवं उन्हें विज्ञान की प्रकृति से अवगत कराना हैं। इससे वे विभिन्न पहलुओं के संबंध में अपने विचारों को निर्भय होकर व्यक्त कर सकेंगे एवं विद्यार्थियों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ स्थापित कर उनमें वैज्ञानिक अभिवृत्ति का विकास कर सकेंगे। छात्राध्यापकों को ज्वलंत मुद्दों पर सृजनात्मक एवं समालोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने योग्य बनाना तथा जो उनके शिक्षण में परिलक्षित हो सके।

Course Outcome:

1.छात्राध्यापकों में विज्ञान की अवधारणाओं की समझ विकसित करना ।
- [ ] छात्राध्यापकों को विज्ञान की प्रकृति के विभिन्न पहलुओं से परिचित कराना।
- [ ] छात्राध्यापकों में वैज्ञानिक अवधारणाओं की समझ एवं उनके संज्ञानात्मक विकास करने योग्य बनाना।
- [ ] छात्राध्यापकों में विज्ञान शिक्षण एवं आकलन हेतु रणनीति निर्माण करने की समझ विकसित करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

विज्ञान की प्रकृति पर समझ बनाना।
- विज्ञान से हमारा जीवन व परिवेश किस तरह से जुड़ा हुआ है इस बात को समझ पाना।
- यह समझना कि विज्ञान सीखने से हमारा क्या मतलब है।
- विज्ञान के अध्ययन–अध्यापन में सूचना और ज्ञान के अन्तर को समझना।
- बच्चों की पृष्ठभूमि, प्रकृति व विभिन्न घटनाओं के प्रति नजरिए को समझना।
- हम कक्षाओं की रचना किस प्रकार करे ' कि सभी बच्चे अच्छी तरह सीख सकें इसमें सीखने की प्रक्रिया की समझ भी निहित है।
- एक विज्ञान शिक्षक होने के नाते अपनी भूमिका को समझ पाना।
- विज्ञान की शिक्षण–विधियों एवं मूल्यांकन–प्रक्रिया की समझ विकसित करना।
- स्थानीय परिवेश, वहाँ के जैविक–अजैविक संसाधन एवं बाल मन की धारणाओं को, विज्ञान अध्ययन–अध्यापन का स्रोत होने की समझ विकसित करना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	विज्ञान की अवधारणाओं का पुनरावलोकन (Recapetulation of Concepts of Science) • कक्षा 1 से 8 तक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों के आधार पर परिवेश में होने वाली निम्नलिखित घटनाओं का पुनरावलोकन एवं अन्य विषयों का विज्ञान से संबंध स्थापित करना। • जंग क्यों लगती है? • बादल कैसे बनते है? • मोमबत्ती जलते समय छोटी क्यों हो जाती है? • वनस्पति और जंतु अपना भोजन कैसे करते हैं? • वनस्पतियों तथा जन्तुओं में पुनरुत्पादन कैसे होता है। • पवन चक्की कैसे कार्य करती है। • बल्ब कैसे प्रकाश देता है। इन सब प्रश्नों के लिए छात्राध्यापक उपलब्ध साहित्य का अध्ययन करेंगे, गतिविधि एवं प्रयोग करेंगे तथा अवलोकन का अभिलेख (रिकॉर्ड) रखेंगे। छात्राध्यापक आपस में तथा शिक्षक– अध्यापक के साथ चर्चा करेंगे, प्रश्नों का उत्तर कैसे प्राप्त करें इस बात पर चिंतन करेंगे, जाँच करने के लिए निश्चित विधि को ही क्यों चुना गया, इन अभ्यासों को करवाते समय शिक्षक– अध्यापक सुविधादाता का कार्य करेंगे।	15Hrs

UNIT - II	विज्ञान क्या है जानना और बच्चों के वैज्ञानिक विचार समझना। (To Know what is science and understand the scientific thoughts, idea of children) • विज्ञान की प्रकृति– अवधारणा, प्रक्रिया एवं उत्पाद • विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान में संबंध • वैज्ञानिक विधि का ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग • वैज्ञानिक एवं विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचार • विज्ञान की अवधारणाओं के बारे में बच्चों के विचारों का अवलोकन विष्लेषण एवं दस्तावेजीकरण।	19Hrs
UNIT - III	सभी के लिए विज्ञान (Science for all) • विज्ञान की कक्षा में लिंग, भाषा, संस्कृति एवं समानता संबंधी मुद्दे; सामाजिक एवं सामाजिक विकास में विज्ञान की भूमिका। • जन सामान्य तथा खेती के लिए पर्याप्त पानी की उपलब्धता पर विचार। • हरित क्रांति और टिकाऊ खेती की विधियां। • सूखा, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं का किसानों पर प्रभाव। • अनेक प्रजातियों के लुप्तप्रायः होने के कारण। • स्थानीय स्तर पर समुदाय में होने वाली समस्याएं एवं निराकरण। • साहित्य, सर्वे, चर्चा, पोस्टर द्वारा अभियान, लोकसुनवाई एवं किसानों से वार्ता तथा क्षेत्र एवं विशेषज्ञों से संबंधित अन्य मुद्दे।	19Hrs
UNIT - IV	पाठ्यपुस्तक एवम् शिक्षण विधियों का संज्ञान (Cognition of teaching methods and text book) • विज्ञान की पाठ्य पुस्तक के निर्माण के दार्शनिक, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार • विषयवस्तु, उपागम और विज्ञान शिक्षण प्रविधियां अर्न्तक्रियात्मक और सहभागी शिक्षण विधियां, सुविधादाता के रूप में शिक्षक • प्रकरण, इकाई की संरचना, अभ्यास की प्रकृति और इनके निहितार्थ • शैक्षिक मानदण्ड और अधिगम के सूचकांक। • विज्ञान पाठ्यचर्या के प्रभावकारी विनिमय हेतु अधिगम स्रोत।	19Hrs
UNIT - V	कक्षा–कक्ष योजना और मूल्यांकन (Classroom Planning and Evaluation) • विज्ञान शिक्षण हेतु शिक्षण तत्परताय कक्षावार, इकाईवार, कालखण्डवार वार्षिक योजना तैयार करना एवं उसका मूल्यांकन। • योजना का मूल्यांकन • आंकलन एवं मूल्यांकन परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व • सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (ब्म्), अधिगम का आंकलन, अधिगम के लिए आंकलन, रचनात्मक आंकलन और उपकरण, सारांशित मूल्यांकन, अधिभार सारणी प्रतिपृष्ठपोषण प्रतिवेदन प्रक्रिया, अभिलेखन और पंजीयन	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

- मध्यप्रदेश में संचालित कक्षा 1 से 8 तक की विज्ञान विषय की पुस्तकें
- विज्ञान कक्षा 1 से 8 की विषय की NCERT द्वारा संचालित पाठ्य पुस्तकें
- बाल वैज्ञानिक कक्षा 6,7 एवं 8 विज्ञान कार्य पुस्तकें 2000, पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल
- स्मॉल साइंस, विज्ञान कक्षा 6, 7 एवं 8 पाठ्य पुस्तकें 2003, होमी भाभा साइंस सेन्टर मुंबई
- प्राथमिक स्तर की पर्यावरण विषय की पुस्तकें । सी ई ई की किताबें ।
- सक्सेना, ए. बी. 2011 निर्माणवाद विज्ञान कक्षा
- ALM शिक्षक संदर्शिका राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल विज्ञान क्या है केरेन हेडाक
- विज्ञान में ज्ञान क्षेत्र, एन सी एफ (2005) NECRT, NCERT नई दिल्ली
- विज्ञान शिक्षण, एन सी एफ पोजी शान पेपर (2005) NECRT, NCERT नई दिल्ली

- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- NCERT(2005). Focus group paper on Science Education, Position Paper. New Delhi.
- Rampal, A. (1993). School science in search of a democratic order? In Kumar, K. (Ed.) Democracy and Education in India, New Delhi: NMML.
- Bal Vigyanik, Text books for Science, Class VI-VIII. Madhya Pradesh: Eklavya.
- NCERT.(2008). Text books for Science, Class VI-VIII. New Delhi: NCERT. Tehelka Magazine.
- NCERT, (2005). Syllabus for Classes at the Elementrary Level. Vol. I, New Delhi: NCERT.

School of Education & Library Science

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapna Avam Sanchalan) Adhiniyam 2020

SYLLABUS II year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	अंग्रेजी शिक्षण Pedagogy of English	L	T	P	C
DELED20Y208		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is to give an expouses of ongoing updated method of ELT to the student teacher. The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student - teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Course Outcome:

To understand the basic concepts and methods of teaching English as a Second Language

- To know about the challenges of teaching English in the context of the learners
- To develop skills for utilising instructional materials for effective teaching
- To develop skills for making creative learning plan and for its classroom transaction

Student Learning Outcomes (SLO):

1. To strengthen English language proficiency of the student teacher.
2. To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English.
3. To enable students to link this with pedagogy.
4. To re- sequence units of study for those who may have no knowledge of English.

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	Approaches and methods to teaching of English. Active Learning Methods Congnitive and constructivist approach : nature and role of learners different kinds of learners. Teaching mutigrade classess multilevel classess. Socio- Psychological factor (attitude, aptitude, motivation, level of aspiration) From knowledge based approach to skill based approach.	15Hrs
UNIT - II	Pedagogical Implications of SLA Theories. Second language acquisition theories Interaction in second language in classroom, from theory to practice the pedagogy of reading. Discourse oriented pedagogy	19Hrs
UNIT - III	Process and Planning. Characteristics of a good teaching plan Different processes of teaching proses, poetry, grammar. Constructivist situations using formats like 5 E's (Engage, Explore, Explain, Elaborats, Evaluate), and SQ4Rs (Survey, Questions, read, recite, review, reflection)	19Hrs
UNIT - IV	Curriculum and resource material: NCF-05 Chapter 3 3.2.2- Curriculum , 3.3.1 The curriculum at different stages NCF-05 Chapter 3 3.1.1- Language education 3.1.2 Home/ first/ Language or mother tongue, 3.1.3 Second Language acquisition. NCF-05 Chapter 2 2.3- Curriculum studies; knowledge and curriculum Position Paper on Language.	19Hrs

UNIT - V	Classroom transaction process □ Role of 'talk' in the classroom to make the class more interactive. □ Development of vocabulary through pictures, flow- charts and language game. □ Dealing with textual exercises (Vocabulary, Grammar, study skills, projectwork) Assessment □ CCE-Concept and procedure: Implications of Assessment- for the learner, for the Teacher and for the community, maintaining teacher's diary, record; informal feedback from the teachers; measuring progress; using portfolio for subjective assessment, □ Assessing speaking and listening, reading and writing abilities through CCE □ Attitude towords errors and mistakes in second language learning.	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.

Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin. (New Edition)

Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.

NCERT (2005). National Curriculam Framework, 2005. New Delhi: NCERT

(http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi.

Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatterly,

M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities and

Classroom Language, Oxford: Oxford University Press.

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्
Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapna Avam Sanchalanal Adhyadesh) 2020

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	गणित शिक्षण (कक्षा 6 से कक्षा 8 तक) Pedagogy of Mathematices	L	T	P	C
DELED20Y208 C		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

पाठ्यचर्या गणित के मूलभूत क्षेत्रों यथा– बीजगणित, ज्यामिति व आंकड़ों के प्रबंधन को देखने के लिए गहरी अंतर्दृष्टि, कौशलों के विकास और संवेदनशीलता में अभिवृद्धि के प्रयास करता है।

Course Outcome:

गणितीय तरीकों से तर्क करने के लिए अन्तर्दृष्टि विकसित करना।
बीजगणितीय चिंतन के प्रति सजगता एवं उसे सराहने की क्षमता विकसित करना।
- ज्यामितीय अवधारणाओं की समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को सूचनाओं के साथ कार्य करने के सांख्यिकीय तरीकों एवं संबंधित गणितीय अवधारणाओं से परिचित कराना जो इस प्रक्रिया में मदद करते हैं।
- भावी शिक्षकों में बच्चों को औपचारिक गणित संप्रेषित करने से संबंधित प्रक्रियाओं पर अपनी प्रतिक्रिया देने की क्षमताओं में अभिवृद्धि करना।
- भावी शिक्षकों को अपनी प्रतिक्रिया देने जैसे कार्यों से जोड़ना जिससे वे गणितीय चिंतन के मूलभूत अंगों को समझने एवं उन्हें संप्रेषित के तरीकों में समर्थ हों।

Student Learning Outcomes (SLO):

संख्या, संख्या प्रणाली व ज्यामिति आदि प्रत्ययों का विकास करना।
- ☐ विभिन्न गणितीय संक्रियाएं व उनके परस्पर संबंधों को समझना।
- ☐ अक्षर संख्या तथा पद की समझ और एक या दो अक्षर संख्या वाले बीजीय व्यंजकों के निर्माण व मौलिक सक्रियाओं का विकास करना।
- ☐ वास्तविक परिस्थितियों का बीजगणितीय कथन व परिवर्तन का ज्ञान कराना।
- ☐ ज्यामितीय शिक्षण में दो या तीन विमाओं वाली आकृति की समझ व निर्माण का ज्ञान कराना।
- ☐ विभिन्न आकृतियो के ज्यामितीय निहितार्थो की समझ विकसित करना।
- ☐ आँकड़ों का प्रत्यय, एकत्रीकरण व विश्लेषण की प्रक्रिया को समझना।
- ☐ प्रारम्भिक सांख्यिकीय प्रविधियों के उपयोग के बारे में ज्ञान देना।
- ☐ औपचारिक गणित को बच्चो तक संप्रेषित करने के लिए वाछित प्रक्रिया अपनाने हेतु शिक्षकों का क्षमतावर्द्धन करना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	गणितीय तर्क (Mathametical Logic) सामान्यीकरण की प्रक्रियायें, पैटर्न पहिचानना और परिकल्पना के निर्माण में सहायक आगमनात्मक तर्क (inductive reasoning) प्रक्रिया। • गणित की संरचना : अभिगृहीत (Axioms), परिभाषाएँ, प्रमेय (Theorem) • गणितीय कथनों Statement की वैधता जाँचने की प्रक्रिया : उत्पत्ति (proof)प्रति–उदाहरण, अनुमान (Conjecture) • गणित में समस्या समाधान– एक प्रक्रिया • गणित में रचनात्मक चिंतन	15Hrs

UNIT - II	बीजगणित चिंतन • अंक पैटर्न से निकलने वाले सामान्यीकरण को अज्ञात के इस्तेमाल द्वारा अभिव्यक्त करने को समझने में मदद करने वाला अंक पैटर्न • क्रियात्मक सम्बन्ध (Functional relation) • चरों (variable) का प्रयोग–कब और क्यों। • सामान्य रेखीय समीकरणों को बनाना और हल करना। • बीजगणितीय चिंतन पर आधारित गणितीय खोजबीन/पहेली। व्यावहारिक अंकगणित और आंकड़ों का प्रबंधन	19Hrs
UNIT - III	स्थान (Space) और आकारों को ज्यामितीय रूप से देखना • ज्यामितीय चिंतन के स्तर– वान हील (Van Hiele) • सरल द्विविमीय और त्रिविमीय आकृतियाँ–ज्यामितीय शब्दावली। • समरूपता और समानता (Congruency and similarity)। • रूपान्तरण और ज्यामितीय आकृतियाँ। • मापन और ज्यामितीय आकृतियाँ। • ज्यामितीय उपकरणों का प्रयोग करते हुए ज्यामितीय आकृतियों की रचना।	19Hrs
UNIT - IV	गणित को सम्प्रेषित करना • पाठ्यचर्या और कक्षागत प्रक्रियाएँ। • गणित के शिक्षण– अधिगम की प्रक्रिया में पाठ्य पुस्तकों की भूमिका। • गणित प्रयोगशाला/संसाधन कक्ष। • छात्रों को उनके कार्यों में हुई गलतियों के बारे में फीडबैक देना। • गणित से डर और असफलता से पार पाना।	19Hrs
UNIT - V	गणित में आकलन से सम्बन्धित मुद्दे • मुक्त उत्तर वाले प्रश्न (open ended questions) और समस्याएं। • अवधारणात्मक समझ के लिए आकलन। • सम्प्रेषण और तर्क जैसे कौशलों के मूल्यांकन के लिए आकलन। • गणितीय विचार को समझाने के लिए उदाहरणों एवं अन्य–उदाहरणों का प्रयोग • तर्क के परिपेक्ष्य में पुस्तक का आलोचनात्मक विश्लेषण • गणितीय शब्दावली और उसके गणितीय अववोध के विकास पर स्पष्टता	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित विषय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकें।

2ण गणित शिक्षण – एम.एस. रावत व एस.बी.लाल

3ण गणित अध्ययन –सत्संगी एवं दयाल

4ण NCF 2005 NCERT द्वारा प्रकाशित

5ण च्वेपजपवद चंचमत छंजपवदंस विबने ळतवनच वद जमंबीपदह व िउंजीमउंजपबे

6ण छब्त्ज् द्वारा तैयार गणित किट प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर

7ण निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009

8ण वैदिक गणित –स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ

9ण वैदिक गणित भाग 1,2,3, – डॉ. कैलाश विश्वकर्मा

10ण मापन एवं मूल्यांकन –आर.ए. शर्मा

11ण राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका?

• (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education

Course Code	सामाजिक विज्ञान शिक्षण Pedagogy of Social Science	L	T	P	C
DELED20Y208		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

छात्राध्यापक सामाजिक विज्ञान की विशेषताओं को समझने के साथ इतिहास, भूगोल, सामाजिक–आर्थिक और सामाजिक–राजनीतिक जीवन की प्रकृति को भी समझ सकेंगे। स्कूली स्तर पर सामाजिक विज्ञान में क्या पढ़ाया जाना चाहिए, और कैसे पढ़ाया जाना चाहिए, इस पर पर्याप्त शोध और विमर्श हुए हैं, जिनको छात्राध्यापकों को जानना चाहिए। सामाजिक विज्ञान के कक्षा शिक्षण के अनुभव और उनसे मिली सीख भी अध्ययन का विषय है।

छात्राध्यापकों से यह भी अपेक्षा है कि वे पाठ्यपुस्तक की अवधारणा से परिचित होने के लिए अन्य सन्दर्भ सामग्रियों का भी उपयोग करें। जिससे वे पाठ्यपुस्तकों और उनकी अवधारणाओं से परिचित सकें।

Course Outcome:

1. इतिहास, भूगोल, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के आधार पर समाज को समीक्षात्मक रूप से समझने और विश्लेषण करने का ज्ञान कौशल विकसित करना।
2. आंकड़े एकत्र करने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने का कौशल विकसित करना।
3. सामाजिक विज्ञान के स्कूली पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों को समीक्षात्मक दृष्टि से विश्लेषण करना।
4. पाठ्यक्रम के अंतरण के लिए इस तरह की विधियों को जानना और उपयोग करना जो बच्चों में सामाजिक घटनाओं में जिज्ञासा उत्पन्न करे तथा समाज व सामाजिक संस्थाओं और उनके क्रियाकलापों को समीक्षात्मक व विचारात्मक दृष्टि से व्यक्त करने की क्षमताएं विकसित कर सके।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. सामाजिक विज्ञान की प्रकृति एवं अवधारणा का विश्लेषणात्मक समझ विकसित करना।
2. प्रशिक्षुओं को उच्च प्राथमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान के पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम से परिचय कराना।
3. प्रशिक्षुओं में सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों के शिक्षण उपागमों एवं विधियों से अवगत करना।
4. सामाजिक विज्ञान में आकलन–मूल्यांकन की समझ विकसित करना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	सामाजिक विज्ञान की प्रकृति सामाजिक विज्ञान और सामाजिक अध्ययन : प्रकृति और क्षेत्र, बच्चों में उनके सामाजिक संदर्भ और वास्तविकताओं की समझ विकसित करने में सामाजिक अध्ययन का योगदान, इतिहास की प्रकृति एवं विषय क्षेत्र के संबंध में विविध दृष्टिकोण, इतिहासकार की भूमिका, इतिहास में दृष्टिकोण, स्रोत और सुबूत, नागरिक शास्त्र में यथा स्थितिवादी और सक्रियवादी / सामाजिक बदलाव का दृष्टिकोण, भूगोल के संबंध में विभिन्न नजरिये, सामाजिक विज्ञान को व्यवस्थित करने के संदर्भ में विभिन्न दृष्टिकोण, विषय केंद्रित, मुद्दा केंद्रित, एकीकृत सामाजिक अध्ययन एवं अर्न्तविषयक सामाजिक विज्ञान। सामाजिक विज्ञान की पाठ्यचर्या एवं महत्वपूर्ण अवधारणायें बदलाव एवं निरन्तरता की समझ, कारण एवं प्रभाव, समय संबंधी दृष्टिकोण एवं कालक्रम, निम्नांकित के माध्यम से सामाजिक – स्थानिक अंर्तक्रिया :– 1. समाज : सामाजिक संरचना, सामाजिक वर्गीकरण समुदाय एवं समूह 2. सभ्यता : इतिहास, संस्कृति 3. राज्य : अधिकार, राष्ट्र, राष्ट्र–राज्य एवं नागरिक 4. क्षेत्र या अंचल : संसाधन, स्थान और लोग 5. बाजार : विनिमय	15Hrs

UNIT - II	बच्चों की समझ, शिक्षण–अधिगम सामग्री एवं कक्षा प्रक्रियायें तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर चुनौतियां : बच्चों का संज्ञानात्मक विकास एवं बच्चों में उनकी उम्र एवं सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में माध्यमिक / उच्च प्राथमिक कक्षाओं में अवधारणा का निर्माण, पाठ्यचर्या एवं शिक्षण विधियों के संदर्भ में इन कारकों का महत्व, अवधारणाओं की समझ के बारे में बच्चों की केस स्टडीज, बच्चे, सामाजिक विज्ञान के ज्ञान का निर्माण एवं कक्षा में अर्न्तक्रिया, सामाजिक विज्ञान के लिए समुदाय एवं स्थानीय स्रोतों सहित विविध शिक्षण–अधिगम सामग्री, विषय के संबंध में नजरिया क्या और कैसा है और वे किस तरह बच्चों की समझ बनाते हैं, इसे समझने के लिए सामाजिक विज्ञान की विभिन्न पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण करना (केस स्टडीज के उपयोग, तस्वीरों, हानियों / आख्यानों, संवाद और बातचीत, प्रयोगों, तुलना, अवधारणाओं के क्रमिक विकास आदि के आधार पर अवलोकन करें)। सामाजिक विज्ञान पाठ्यचर्या के शिक्षण को समझने और उसका समालोचनात्मक मूल्यांकन करने के लिए कक्षाओं का अवलोकन।	19Hrs
UNIT - III	शिक्षण शास्त्र एवं आकलन शिक्षण विधियां : सामाजिक विज्ञान में अनुमान / खोज पद्धति, प्रॉजेक्ट विधि, आख्यानों का उपयोग, तुलना,अवलोकन, संवाद एवं परिचर्चा, सामाजिक विज्ञान के विभिन्न विषयों में आंकड़े, इसके स्रोत एवं साक्ष्य की अवधारणा, तथ्य एवं मत के बीच अंतर, पूर्वाग्रहों एवं झुकावों को समझना, तार्किक चिंतन के लिए निजी / प्रायोगिक ज्ञान का इस्तेमाल, सामाजिक विज्ञान में जानकारी के पुनर्स्मरण पर आधारित मूल्यांकन पद्धति का प्रभुत्व, अधिगम का मूल्यांकन करने के वैकल्पिक तरीके, मूल्यांकन के आधार, प्रश्नों के प्रकार, खुली किताब परीक्षा का उपयोग आदि।	19Hrs
UNIT - IV	पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण शास्त्र की समझ • सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकें तैयार करने हेतु दर्शन एवं मार्गदर्शक सिद्धान्त • सामाजिक अध्ययन शिक्षण के लिए विषयवस्तु, नजरिया एवं शिक्षण विधियां–बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सूत्रधार के रूप में शिक्षक। • इकाई के विषय एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका निहितार्थ। • अधिगम के अकादमिक मापदण्ड एवं संकेतक। • सामाजिक अध्ययन की पाठ्यचर्या के प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन।	19Hrs
UNIT - V	कक्षा शिक्षण की योजना एवं मूल्यांकन • शिक्षण की तैयारी : सामाजिक अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना • योजना का मूल्यांकन • आकलन और मूल्यांकन – परिभाषा, आवश्यकता और महत्व • सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)– अधिगम के लिए आकलन, अधिगम का आकलन, रचनात्मक आकलन एवं उसके साधन, योगात्मक आकलन, भारांकन सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर।	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

- सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण, माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र. भोपाल
- सामाजिक विज्ञान (विषय–वस्तु एवं शिक्षण विधियाँ) आपरेशन क्वालिटी– एस.सी.ई.आर.टी.
- एस.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकें।
- राष्ट्रीय फोकस समूह (एन.सी.एफ.) सामाजिक विज्ञान शिक्षण आधार पत्र।
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Batra, P. (ed.)(2010). Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges, New Delhi: Sage.
- Chakravarty, U. (2006). Everyday Lives, Everyday Histories: Beyond the Kings and Brahmanas of 'Ancient' India', New Delhi: Tulika Books, Chapter on: History as Practice: Introduction, 16-30.
- George, A. and Madan, A. (2009). Teaching Social Science in Schools: NCERT's New Textbook Initiative. NewDelhi: Sage.
- Kumar, K. (1996). Learning From Conflict. Delhi: Orient Longman, pp.25-41, 79-80.
- NCERT, (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of Social Sciences. New Delhi: NCERT, 1-19.
- Eklavya (1994). Samajik Adhyayan Shikshan: Ek Prayog, Hoshangabad: Eklavya.
- NCERT Social Science Textbooks for Classes VI-VIII, New Delhi : NCERT.
- Social Science Textbooks for Casses VI-VIII, Madhya Pradesh: Eklavya.
- Jain, M. (2005). Social Studies and Civics: Past and Present in the Curriculum, Economic and Political Weekly,60(19). 1939-1942.

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapna Avam Sanchalan) Adhiniyam 2020

School of Education & Library Science

SYLLABUS II year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	पर्यावरणीय अध्ययन शिक्षण (पूर्व प्राथमिक एवं प्राथमिक स्तर के लिए) Pedagogy of Environmental Studies (for Early Primary and Primary)	L	T	P	C
DELED20Y207		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

प्राथमिक शिक्षा में वर्तमान चुनौतियों से जूझने के लिए छात्राध्यापकों को विषय की प्रकृति व विषयवस्तु के सैद्धांतिक व प्रायोगिक पहलुओं में दक्ष किया जा सके। पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण करने वाले शिक्षकों को पर्यावरण के दार्शनिक एवं ज्ञान मीमांसीय (expistemological) आधार समझते हुये इस विषय से जुड़ी विज्ञान, सामाजिक–विज्ञान, एवं पर्यावरणीय अध्ययन की अवधारणाओं को कक्षा शिक्षण के दौरान सिखा सकें। यह पाठ्यक्रम बाल विकास विषय के साथ मिलकर यह समझने में मदद करेगा कि बच्चे अपने भौतिक एवं सामाजिक पर्यावरण के प्रति गहरी समझ किस तरह विकसित करते हैं एवं यह अंत:दृष्टि उनकी कक्षा में शिक्षण प्रक्रियाओं को समृद्ध बनाएगी।इस कोर्स का उद्देश्य ऐसे शिक्षक तैयार करना है जो पर्यावरण अध्ययन के दार्शनिक व ज्ञान मिमांसीय आधारों को समझ सकें और इसे विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा के समग्र अध्ययन क्षेत्र के रूप में समझ सकें। पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम में बच्चों के अनुभव और उनके सवालों को कक्षा में लाने के लिए पर्याप्त मौके भी उपलब्ध कराए गये हैं। गतिविधियों से सीखने के अनुभवों को स्थान देने के द्वारा सक्रिय वातावरण निर्माण के अवसर प्रदान किए गए हैं। बच्चों को केन्द्र में मानकर चलने वाली इस व्यवस्था में आकलन को लेकर भी समझ में काफी बदलाव आए हैं और इस पाठ्यक्रम से अपेक्षा है कि छात्राध्यापक इन बदलावों को समझकर अपनी कक्षाओं में अलग–अलग चर्चाएँ एवं गतिविधियाँ कराने के लिये तैयार हो सकेंगे। उनकी भूमिका को अब तक मार्गदर्शक के रूप में देखा जा रहा है जो समय–समय पर उचित प्रश्न पूछ कर अपने अनुभवों से कुछ नया जोड़कर या ऐसे ही किसी और तरीकों से बच्चों को उनके ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सहयोग करेंगे।

Course Outcome:

1. छात्राध्यापक को पर्यावरण अध्ययन के क्षेत्र को समझने एवं पाठ्यचर्या के विभिन्न दृष्टिकोण को आत्मसात करने में मदद करना।
2. छात्राध्यापक एक सुविधादाता के रूप में बच्चों से विज्ञान व पर्यावरण से संबंधित जिज्ञासाओं पर सवाल करना तथा इस विषय में चर्चा करने के लिए प्रेरित करना।
3. करके सीखने के दृष्टिकोण पर आधारित प्राथमिक स्तर (कक्षा 1–5 तक) की कक्षायोजना पाठयोजना का विकास करना।
4. छात्राध्यापकों को पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के उपयुक्त–बालकेन्द्रित, अनुभव और गतिविधि आधारित तरीकों के लिए तैयार करना जिसमें शिक्षण बालकेन्द्रित, अनुभव, गतिविधि आधारित हो और जिससे पर्यावरण अध्ययन के कौशलों व दक्षताओं का विकास हो सके।
5. छात्राध्यापकों को बच्चों के सीखने की गति के आधार पर विभिन्न तरीकों से आकलन करने के लिए तैयार करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य व उसकी प्रकृति को समझते हुए बच्चों के बौद्धिक, बोधात्मक व संज्ञानात्मक क्षमता के विकास में उसके महत्व को पहचानना।
2. पर्यावरण अध्ययन में निहित अवधारणाओं व उनसे संबंधित तथ्यों का विश्लेषण करने का सामर्थ्य विकसित करना।
3. अपने परिवेश के अनुभवों के आधार पर बच्चो ं में अवधारणाओं का विकास व परिष्करण के तरीके जानना व विकसित करना।
4. कक्षा शिक्षण में संवाद व गतिविधि के माध्यम से पर्यावरणीय प्रकियाओं और परिवर्तनों की व्याख्या करने की योग्यता प्राप्त करना।
5 प्रकृति, व्यक्ति एवं समाज के विभिन्न पहलुओं की संरचना और प्रकियाएं एवं उनके बीच के अंतर्सम्बंधो ं को जानने–समझने की जिज्ञासा व ललक उत्पन्न करना।
6. व्यक्ति, परिवार, समुदाय, राष्ट्र एव ं विश्व स्तर के मुद्दों को व्यापक संदर्भ एवं विश्व स्तर के मुद्दों को व्यापक संदर्भ में समझने की योग्यता विकसित करना।
7. पर्यावरणीय परिघटनाओं में प्राकृतिक, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि अलग–अलग पहलुओं को समझते हुए समेकित दृष्टिकोण विकसित करना।
8. सामाजिक–सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशीलता, सहिष्णुता एवं समता–समरसता का भाव विकसित करना।
9. लैंगिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभेदों के प्रति संवेदनशील तथा समालोचनात्मक दृष्टि विकसित करना।
10. बाल मनोविज्ञान व बच्चे कैसे सीखते हैं की समझ को व्यापक, तर्कपूर्ण एवं कमबद्ध करने का प्रयास करना।
11. खोजी व करके सीखने की प्रवृति उत्पन्न करना तथा अंधविश्वासों एवं पूर्वाग्रहों के प्रति सचेत करना।
12. कक्षा शिक्षण व अन्य गतिविधियों द्वारा विद्यार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना।
13. दुर्घटनाओं/आपदाओं के समय उचित एवं तात्कालिक निर्णय लेने की क्षमता विकसित करते हुए बचाव व निदानात्मक उपायों पर भी समझ बनाना।
14. पर्यावरण अध्ययन शिक्षण में विभिन्न शिक्षण–विधियों के उपयोग एवं उनके विकास करने की क्षमता बढ़ाना।
15. स्थानीय संसाधनो ं का सृजनात्मक उपयोग करते हुए शिक्षण–सामग्रियो ं का निणर्य करना एवं उनमें आवश्यकतानुसार नवाचार कर उद्देश्यपूर्ण बनाना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	पर्यावरण अध्ययन की अवधारणाएँ (Concept of EVS) पर्यावरण अध्ययन का अर्थ, क्षेत्र एवं महत्व, प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का हिस्सा बनने के संदर्भ में इसका विकासक्रम। • एकीकृत रूप में पर्यावरण अध्ययन : विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और पर्यावरण शिक्षा से ली गयी समझ। • पर्यावरण अध्ययन पर विविध दृष्टिकोण, "प्राशिका" कार्यक्रम (प्राथमिक शिक्षा में "एकलव्य" का नवाचारी प्रयोग), एन सी एफ (NCF) 2000, एन सी एफ (NCF) 2005। बच्चों के विचारों को समझना (Understanding Children's Ideas) • प्राथमिक स्तर के बच्चों के ज्ञान की प्रकृति एवं सीमाएं । • बच्चों में ज्ञान अर्जन की विधियां। • स्थान और समय की अवधारणा । • पर्यावरण अध्ययन के संदर्भ में बच्चों की संज्ञानात्मक विकास की अवधारणाओं में पियाजे के अनुसार परिवर्तन)। • पाठ्यपुस्तकों सहित पाठचर्या सामग्री के विभिन्न प्राकल्पों (Set) की समीक्षा (विश्लेषण)।	15Hrs
UNIT - II	पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण और आकलन (Teaching of EVS and Assessment) • पर्यावरण अध्ययन में प्रक्रियाएं : प्रक्रिया कौषल–सामान्य प्रयोग, अवलोकन, वर्गीकरण,समस्या समाधान, परिकल्पना रचना, प्रयोगों का अभिकल्प तैयार करना, परिणामों का अभिलेख, आंकड़ों का विश्लेषण, पूर्वानुमान, परिणामों की व्याख्या एवं अनुप्रयोग। • नक्शा व चित्र में अंतर करना, नक्शा पढ़ना। • पूछताछ के तरीके : गतिविधियां, परिचर्चा, समूह कार्य,भ्रमण, सर्वेक्षण, प्रयोग आदि। • बच्चों के विचार व उनके अनुभव सीखने के साधन के रूप में उपयोग करना। • कक्षा शिक्षण में शिक्षक की सुविधादाता के रूप में भूमिका। • पर्यावरण अध्ययन – भाषा और गणित का एकीकरण। • कक्षा में सूचना संचार तकनीक (ICT) का उपयोग। • आंकलन एवं मूल्यांकन– परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्व। • आंकलन की विभिन्न विधियां एवं भविष्य में अधिगम के लिए आकलन का उपयोग	19Hrs

UNIT - III	पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की तैयारी ((Planning for Teaching EVS)) • योजना को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता। • पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के कुछ उदाहरण। • बच्चों के वैकल्पिक दृष्टिकोण को समझना। • अवधारणा चित्र एवं थीमैटिक वेब चार्ट्स (संकल्पना अवधारणा एवं विषयगत भेद नक्शे, चार्ट्स)। • इकाई योजना की रूपरेखा बनाना एवं उसका उपयोग। • संसाधन इकट्ठा करना। • स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का उपयोग। • दृश्य श्रव्य एवं इलेक्ट्रॉनिक सामग्री। • प्रयोगशाला / विज्ञान किट। • पुस्तकालय। • सहपाठी समूह अधिगम (बच्चों की आपसी बातचीत) का उपयोग।	19Hrs
UNIT - IV	पाठ्यपुस्तक एवं शिक्षण विधियां (Textbooks and Pedagogy) पर्यावरण अध्ययन की पुस्तक तैयार करने के संदर्भ में मार्गदर्शक सिद्धान्तः सामाजिक दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक सन्दर्भ • पर्यावरण अध्ययन शिक्षण हेतु विषयवस्तु, उपागम एवं शिक्षण विधियां– बातचीत आधारित एवं भागीदारीपूर्ण विधियां, सुविधादाता (Facilitator) के रूप में शिक्षक • इकाई की विषयवस्तु एवं संरचना, अभ्यास कार्य की प्रकृति एवं उसका क्रियान्वयन • अधिगम के संकेतक एवं मापदण्ड • प्रभावी शिक्षण के लिए अधिगम संसाधन	19Hrs
UNIT - V	**कक्षा योजना एवं मूल्यांकन (Classroom Planning and Evaluation)** शिक्षण की तैयारी : पर्यावरण अध्ययन शिक्षण की योजना, सत्र योजना, इकाई योजना और कालखण्ड योजना • योजना का मूल्यांकन • चिंतनशील (Reflective) शिक्षण एवं अधिगम की समझ • मूल्यांकन की अवधारणा एवं महत्व, सीसीई (CCE) • चिंतनशील (Reflective) प्रश्नों की तैयारी एवं चयन • सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)– अधिगम के लिए आंकलन, अधिगम का आंकलन, रचनात्मक मूल्यांकन एवं उसके साधन, योगात्मक मूल्यांकन, मूल्य तुलना सारणी (वेटेज टेबल), फीडबैक एवं रिपोर्टिंग प्रक्रिया, अभिलेख एवं रजिस्टर	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

- पर्यावरणीय पाठ्य पुस्तकें (प्राथमिक स्तर)
- दिगन्तर जयपुर का साहित्य
- एकलव्य मध्यप्रदेश का साहित्य संगति, एवेही एवेकस मुंबई
- एनसीईआरटी (2007) एन्वायरमेंटल स्टडीज–लुकिंग एराउन्ड Class-III-V नई दिल्ली
- एनसीएफ (2005) एवं एनसीटीई (2009) दिल्ली
- पर्यावरणीय अध्ययन– ए.बी. सक्सेना (रीजनल कॉलेज, भोपाल)
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- विज्ञान शिक्षण का आयोजन–ए.बी. सक्सेना (रीजनल कालेज, भोपाल)
- पर्यावरण अध्ययन शिक्षण – प्रो. शर्मा, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	योग शिक्षा **Yoga Education**	**L**	**T**	**P**	**C**
DELED20Y206		4	2	0	6
Pre -requisite	**Nill**	**Syllabus version**			
		100 Marks			

Course Objectives:

पाठ्यक्रम में शामिल करने का औचित्य यह है कि शालेय स्तर पर आसन और प्राणायाम को करवाया जाये। जिससे बच्चों में एकाग्रता, ध्यान केन्दण के साथ–साथ शारीरिक स्वास्थ्य बन सके।

Course Outcome:

1. छात्राध्यापकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिए योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु।
2. उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक व मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक संतुलन बना रहे।
3. युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना, जैसे जागरुकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति।
4. युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना।
5. भारतीय संस्कृति के उन व्यवहारों के लिए सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं।
6. आदर्श सामाजिक कौशल एवं ताकत का विकास करने के लिए अवसरों का निर्माण करना।
7. योग दर्शन की दार्शनिक अवधारणाओं के बारे में एक व्यापक विचार विकसित करना।
8. मानव जीवन के लिए योग की अवधारणा एवं व्यवहार व उसके आशय को समझना।
9. योग की अवधारणा को समझना व योग के विभिन्न सिद्धान्तों का व्यवहार में लाना।
10. पतंजलि, अरबिन्दो व भागवद् गीता के योग सिद्धान्तों के विषय में एक अन्तर्दृष्टि विकसित करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. छात्र–शिक्षकों में जीवन की गुणवत्ता विकसित करने के लिए योग व्यवहारों के सिद्धान्तों की समझ पैदा करने हेतु।
2. उचित योग आसन को प्रदर्शित करने की योग्यता विकसित करना जिससे शारीरिक व मानसिक दशा विकसित हो और भावनात्मक संतुलन बना रहे।
3. युवाओं की मनोवैज्ञानिक क्रियाओं को विकसित करने में मदद करना, जैसे जागरुकता, एकाग्रता एवं इच्छा शक्ति।
4. युवाओं में सहयोग की भावना को प्रोत्साहित करना।
5. भारतीय संस्कृति के उन व्यवहारों के लिए सम्मान विकसित करना जो अर्थपूर्ण एवं प्रासंगिक शैक्षिक रणनीतियों का समर्थन करती हैं।
6. आदर्श सामाजिक कौशल एवं ताकत का विकास करने के लिए अवसरों का निर्माण करना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	योगाभ्यास के सिद्धांत • आसन की परिभाषा एवं वर्गीकरण, आसन करते समय रखने वाली सावधानियॉ, आसनों का वर्गीकरण– ध्यानात्मक आसन, विश्रामात्मक आसन, शरीर सम्वर्धनात्मक आसन, खड़े होकर किये जाने वाले आसन, बैठकर किये जाने वाले आसन, पेट के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, पीठ के बल लेटकर किये जाने वाले आसन, सूर्यनमस्कार का अर्थ, विभिन्न स्थितियॉ एवं लाभ।	15Hrs
UNIT - II	प्राणायाम प्राणायाम का अर्थ एवं प्रकार, पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अर्थ, प्राणायाम के अभ्यास में पूरक, कुम्भक एवं रेचक का अनुपात, प्राण के भेद, मुख्य प्राण एवं उपप्राण तथा उनका परिचय (प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान) उपप्राण– नाग, कूर्म कृंकल, देवदत्त, धनन्जय) प्राणायाम के अभ्यास में रखी जाने वाली सावधानियाँ।	19Hrs

UNIT - III	बन्ध, मुद्रा बंध का अर्थ, प्रकार लाभ (जालंधर बंध, उड़िडयान बंध एवं मूलबंध) मुद्रा का अर्थ, प्रकार एवं लाभ (चिनमुद्रा, ज्ञानमुद्रा, ब्रह्ममुद्रा, योगमुद्रा, अश्वनीमुद्रा, शाम्भवीमुद्रा, अपानमुद्रा, पृथ्वीमुद्रा)	19Hrs
UNIT - IV	शुद्धि क्रियायें शुद्धि क्रियाओं के प्रकार, अभ्यास की विधि, लाभ तथा आवश्यक सावधानियाँ (धौति, वस्ति, नेति, नौलि, त्राटक एवं कपालभॉति)	19Hrs
UNIT - V	भारतीय योगियों का परिचय एवं उनका योगदान महर्षि वशिष्ठ, महर्षि पतंजलि, आदिशंकरार्चाय, गुरू गौरखनाथ, योगी भर्तृहरि, स्वामी शिवानन्द, स्वामी कुवल्यानन्द, स्वामी विवेकानन्द।	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पातंजलि योग प्रदीप – स्वामी ओमकारानन्द – गीता प्रेस गोरखपुर
2. योगांक – गीता प्रेस गोरखपुर
3. योग और हमारा स्वास्थ्य– आर.के. स्वर्णकार आरती प्रकाशन इलाहबाद
4. योगदर्शनम् – आचार्य उदयजी शास्त्री विजय कुमार गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली।
5. पातञ्जल योग सार – डॉ. साधना, दौनेरिया, मधूलिका प्रकाशन इलाहबाद
6. योग और यौगिक चिकित्सा – प्रो. राम हर्ष सिंह चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी ।

- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	Proficiency in English	L	T	P	C
DELED20Y205		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

This Course focuses on the teaching of English to learners at the elementary level. The aim is also to expose the student -teacher to contemporary practices in English language Teaching (ELT). The course also offers the space to critique existing classroom methodology for ELT.

The theoretical perspective of this course is based on a constructivist approach to language learning. This course will enable the student-teacher to create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. The course will also focus on developing an understanding of second language learning.

Course Outcome:

1. To strengthen English language proficiency of the student teacher.
2. To brush up their knowledge of grammatical, lexical and discourse systems in English.
3. To enable students to link this with pedagogy.
4. To re- sequence units of study for those who may have no knowledge of English

Student Learning Outcomes (SLO):

1- To understand the need and importance of English at present time.
2- To strengthen the student-teacher's proficiency in English.
3- To enrich their vocabulary and brush up their knowledge of grammar of English in context.
4- To enable student-teachers to link their proficiency with pedagogy.

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	Status of English in India • English around us • English as associated official language in multicultural India. • English as second/foreign language	15Hrs
UNIT - II	Listening & Speaking. • Listening with comprehensive – simple instructions, public enhancements telephone convesation, radio/TV. • Enhancing listening and speaking abilities through discussions, role-play, interaction radio instruction (IRI) programms • Using role play, drama, story telling, poems, and songs as a pedagogical tool. • Listining to oral discourses (speech, discussion, news, sports commentary,interviews, announcements, ads etc) • Producing oral discusses (speech, discussion, news sport, sports commentary, interviews, announcements, ads etc)	19Hrs
UNIT - III	Reading. • Skills of reading, skimming, seaming, extensive and intensive reading, reading about silent reading. • Reading for global and local comprehension. • Critical reading – process postultes and stratigres.	19Hrs

UNIT - IV	Writing. Writing text and identifying their features. Texts may include discriptions, conversation, narratives,biographical sketches, plays, poems, letters, reports, reviews, notices, adverts, prochures etc. • Editing text written by one self and others. • Error analysis	19Hrs
UNIT - V	**Vocabulary & Grammar** • Synonyms, antonyms, homophones, homographs, homonyms, phrasal verbs, idioms. • Word formation enrichment of vocabulary abbreviation • Type of sentences (simple, complex and compound) • Classification of clases based on structure and function • Voice, narration.	15Hrs

Referances

- Anandan. K.N.(2006). Tuition to Intuition, Transend, Calicut.
- Brewster, E., Girard, D. and Ellis G. (2004). The Primary English Teacher's Guide. penguin.(New Edition)
- Ellis, G. and Brewster, J. (2002). Tell it agin! The New Story-telling Handbook for Teachers. Penguin.
- NCERT (2005). National Curriculam Framework,2005. New Delhi: NCERT
- NCERT (2006). Position Paper National Focus Group on Teaching of English. New Delhi.
  Scott, W.A. and Ytreberg, (1990). Teaching English to Children. London: Longman Slatterly,
  M. and Willis, J.(2001). English for Primary Teachers: A Handbook of Activities andClassroom Language. Oxford: Oxford University Press.
- (http://www.tess-india.edu.in/ in OER in Vedio)

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं शिक्षक विकास School culture, leadership and teacher development	L	T	P	C
DELED20Y204		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

छात्राध्यापकों को शिक्षक शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए काम कर रही विभिन्न प्रशासनिक संस्थाओं और सहयोगी संस्थाओं की भूमिका और योगदान को समालोचनात्मक रूप से जाँच करने के भी अवसर प्रदान करेगा।

Course Outcome:

सछात्राध्यापकों को भारतीय शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं से परिचित कराना।

1. शिक्षा प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाओं के सन्दर्भ में स्कूल की संरचना और प्रबंधन के विचार को स्पष्ट रूप से समझने में छात्राध्यापकों की सहायता करना।
2. किसी स्कूल की प्रभावशीलता के विशिष्ट सन्दर्भों को समझने में मदद करना।
3. शालेय नेतृत्व एवं प्रबंधन में बदलाव की समझ को विकसित करने में मदद करना।
4. शैक्षिक नेतृत्व, बदलाव के घटक और व्यावहारिक परियोजना कार्यों के बीच के संबंधों को पहचान पाने में छात्राध्यापकों की मदद करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. विद्यालय संस्कृति एवं प्रबंधन के विभिन्न आयामों की समझ बनाना।
2. विद्यालय मे ं नवाचारी परिवर्तन के विभिन्न संसाधनो ं एवं तरीकों का ` समझना।
3. कक्षा प्रबन्धन के विभिन्न पहलुओं से अवगत होना तथा सीखने–सिखाने की प्रकिया के संदर्भ में उनका विश्लेषण करना।
4. विद्यालय मे ं विद्यार्थियों के आकलन एवं मल्ू याकं न की व्यवस्था का ` समझना तथा विश्लेषण करना।
5. शिक्षकों के वृत्तिक विकास के विभिन्न आयामों को समझना।
6. विभिन्न शैक्षिक संस्थाओं एवं सरकारी योजनाओं की समीक्षा एवं संस्थाओं के साथ सम्पर्क स्थापित करने की योजना विकसित करना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	भारतीय शैक्षिक प्रणाली की संरचना एवं प्रक्रियाएँ Structure and processes of the Indian Education System • विभिन्न प्रशासनिक प्रणालियों के अन्तर्गत शालाओं के प्रकार। • शैक्षिक पदाधिकारियों की भूमिका और जवाबदेही। • शाला और सहयोगी संगठनों के साथ संबंध।	15Hrs
UNIT - II	शाला प्रभावशीलता और शालेय मानदण्ड School effectiveness and school standards • शालेय प्रभावशीलता; क्या है, इसको कैसे मापेंगे? • शिक्षा के मानदण्डों की समझ और उनका विकास। • कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षक। • समावेशित शिक्षा की पाठ–योजना, कक्षा–व्यवस्थापन की तैयारी और समावेशी शिक्षा। • कक्षा कक्ष में सम्प्रेषण तथा कक्षा में बहु–प्रज्ञता स्तर।	19Hrs
UNIT - III	शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन School Leadership and Management • प्रशासनिक नेतृत्व। • समूह नेतृत्व। • शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व। • परिवर्तन के लिए नेतृत्व। • बदलाव प्रबंधन।	19Hrs

UNIT - IV	शिक्षा में बदलाव–सुगमता (Change facilitation in Education) • सर्वशिक्षा अभियान (SSA) के अनुभव। • शिक्षा में समानता। • बालिका शिक्षा–प्रोत्साहन और योजनाएँ। • शैक्षिक एवं शालेय सुधार के मुद्दे। • शिक्षा में परिवर्तन–तैयारी एवं सुविधा/सुविधा सेवा।	19Hrs
UNIT - V	शिक्षक विकास की समझ **Understanding Teacher Development** •शिक्षक–विकास, शिक्षक–शिक्षा और शिक्षक–प्रशिक्षण की अवधारणा। • शिक्षक का विकास, छात्र, प्रबंधन एवं समुदाय पर प्रभाव। • भारत में शिक्षक–शिक्षा के विकास का एक संक्षिप्त परिचय। • वैश्विक परिदृश्य में शिक्षक शिक्षा का परिवर्तित होता स्वरूप। • पूर्व सेवाकालीन एवं सेवाकालीन शिक्षक शिक्षा : अवधारणा, प्रकृति, उद्देश्य और कार्यक्षेत्र (Scope)। • शिक्षक–शिक्षा प्रणाली के विषय में विभिन्न आयोगों और समितियों की अनुशंसाएं। • राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 तथा इसके POA का शिक्षक–शिक्षा प्रणाली पर प्रभाव। • IASE, DIET तथा CTE की भूमिका और कार्य। • UGC, NCERT, NCTE, NUEPA, SCERT आदि संस्थाओं का नेटवर्किंग, कार्य और भूमिका।	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

- मजूमदार, एस. – अधोसंरचना एवं शिक्षा प्रशासन
- बत्रा, एस. (2003)– शालेय सहयोग के लिए शाला निरीक्षण
- आचार्य, महेन्द्र देव – विद्यालय प्रबंध, नई दिल्ली राष्ट्रवाणी प्रकाशन (2005)
- लर्निंग कर्व (सितम्बर 2012)– हिन्दी अंक 4 स्कूल नेतृत्व अज़ीम प्रेमजी विश्व विद्यालय प्रकाशन
- मुखोपाध्याय, मर्मर– शिक्षा में संपूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन ।
- शिक्षा में नये आयाम – प्रकाशक राज्य शिक्षक प्रशिक्षक मण्डल म.प्र. भोपाल संस्करण (1993)
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्
Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapna Avam Sanchalanal Adhyadesh) 2020

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education

Course Code	शिक्षा में समावेशी एवं जेंडर मुद्दे Emerging Gender and Inclusive Perspecitives in Education	L	T	P	C
DELED20Y203		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

छात्राध्यापकों को जीवन के अनुभवों में व्याप्त विविधता और विभिन्न प्रकार के बच्चों के आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाना है। विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, वंचित समुदाय से आने वाले बच्चों व लड़कियों को परंपरागत रूप से शिक्षा के विमर्श के हासिए पर धकेला गया है। आज समावेशी शिक्षा को जिस तरह से समझा जा रहा है उसमें इन सभी को स्थान मिलना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के आलोक में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम के लेंस से शिक्षा को देखने के बाद यह कोर्स समावेशी शिक्षा की प्रकृति और इसे कक्षा में लागू करने के लिए शिक्षक के लिए आवश्यक संवेदनशीलता और कौशलों के बारे में भी बात करता है।

Course Outcome:

समावेशी शिक्षा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना

- सीखने में पाठ्यचर्या, शाला संगठन और शिक्षण उपागम में मौजूद भेदभावपूर्ण रवैया कैसे बाधा बनता है समझना।
- स्कूल की संरचना/व्यवस्था (अंतर्निहित व स्पष्ट) किस प्रकार से सभी बच्चों को समावेशी शिक्षण प्रक्रिया में शामिल करने में बाधक है उसे समझना।
- भारतीय कक्षा में असमानता व विविधता को सम्बोधित करने के लिए ऐसी पाठ्यचर्या व शिक्षणशास्त्र तैयार करना जो सभी बच्चों को शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ सके जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे भी शामिल हों।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. समाज के समावेशी परिप्रेक्ष्य की अवधारणा तथा आवश्यकता को समझना।
2. समाज में जेण्डर समानता की अवधारणा तथा औचित्य को समझना।
3. विशेष आवश्यकतावाले बच्चों (दिव्यांगजन) की आवश्यकतानुरूप शिक्षा के स्वरूप को समझना।
4. विद्यालय के सीखने–सिखाने की प्रकिया को समावेशी परिप्रेक्ष्य एवं जेण्डर समानता के आलाके में विंश्लेषित करना।
5. विद्यालयी माहौल को समावेशी एवं जेण्डर समानता के अनुरूप निर्मित करने के तरीकों को समझना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	समावेशी शिक्षा Inclusive Education • भारतीय शिक्षा में समावेशन एवं बहिष्करण के रूप (समाज का हाशियाकृत वर्ग, जेण्डर, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे)। • समावेशी शिक्षा का अर्थ।	15Hrs
UNIT - II	• भारतीय स्कूली कक्षा में गैर बराबरी एवं विविधता पर नजर : शिक्षाशास्त्रीय एवं पाठ्यचर्या सरोकार। • समावेशी शिक्षा के लिए आकलन की प्रकृति को समझना एवं उसकी पड़ताल।	19Hrs
UNIT - III	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे Children with Special Needs • विशेष आवश्यकता एवं समावेशन के बारे में ऐतिहासिक व समकालीन दृष्टिकोण। • अधिगम कठिनाईयों के प्रकार। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, आकलन एवं बातचीत। • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के शिक्षण उपागम व कौशल।	19Hrs
UNIT - IV	जेण्डर स्कूल एवं समाज (Gender, School and Society) • पुरुषत्व व स्त्रीत्व की सामाजिक संरचना। • पितृसत्ता की अन्य सामाजिक संरचनाओं व पहचानों के साथ अंतर्क्रिया।	19Hrs

UNIT - V	• स्कूल में जेण्डर पहचान को पुनः उभारना पाठचर्या, पाठ्यपुस्तकें, कक्षा प्रक्रियायें एवं विद्यार्थी– अध्यापक बातचीत। • कक्षा में जेण्डर समानता के लिए काम करना।	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

- मध्यप्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (2001) विकलांग बच्चों हेतु समेकित शिक्षा शिक्षक मार्गदर्शिका ।
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2001) आधार, भोपाल, राज्य शिक्षा केन्द्र
- राज्य शिक्षा केन्द्र (2005) भारतीय समाज में शिक्षा भाग–2 (प्रथम वर्ष) राज्य शिक्षा केन्द्र
- अग्रवाल गीता (1981) विकलागंता समस्या और समाधान, निधि प्रकाशन दिल्ली
- भार्गव, महेश (2004) पब्लिकेशन चिल्ड्रेन– देयर एजुकेशन एण्ड रिहबिलेटशन, एच.पी. भार्गव बुंक हाउस, कचहरी घाट आगरा।
- भार्गव, महेश (2004) विशिष्ट बालक, एच.पी. भार्गव बुंक हाउस, कचहरी घाट आगरा।
- मिश्र, विनोद कुमार (2003) विकलांगों के अधिकार कल्याणी शिक्षा परिषद, जाटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली
- जोसेफ, आर.ए. (2003) विकलांगता के क्षेत्र में अधिनियम पुनर्वास के आयाम समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी
- जोसेफ, आर.ए. (2004) विकलांगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विशेष शिक्षा एवं पुर्नवास, समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी
- बन्टी शर्मा, आर.ए. (2008) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।
- गिजुभाई बधेका– मॉनेसरी पद्धति
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Bhattacharjee, Nandini (1999). Through the looking-glass: Gender Socialisation in a Primary School in T. S. Saraswathi (ed.) Culture, Socialization and Human Development: Theory, Research and Applications in India. Sage: New Delhi.
- Ghai, Anita (2008). Gender and Inclusive education at all levels In Ved Prakash & K.
- Kumar, Krishna (1988). What is Worth Teaching? New Delhi: Orient Longman. Chapter 6: Growing up Male. 81-88.

Singh, Renu (2009), The wrongs in the Right to Education Bill, The Times of India, 5 July.

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्
Estd. by Madhya Pradesh Niji Vishwavidyalaya (Sthapna Avam Sanchalanal Adhyadesh, 2020

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	संज्ञान, अधिगम और बाल विकास (COGNITION LEARNING AND THE DEVELOPMENT OF CHILDREN)	**L**	**T**	**P**	**C**
DELED20Y201		**4**	**2**	**0**	**6**
Pre -requisite	**Nill**	**Syllabus version**			
		100 Marks			

Course Objectives:

कोर्स का उद्देश्य छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना है। इस कोर्स की सहायता से शिक्षकों में शिक्षण अधिगम की समझ बनेगी और कक्षा में इसको उपयोग कर सकेंगे। यह उम्मीद की जाती है कि शिक्षक अनुदेशक बनने की अपेक्षा अधिक से अधिक सहयोगी एंव सुविधादाता बनें। एक और उद्देश्य यह है कि छात्रों में शोध विधि की समझ बनाना तथा बच्चों के बहु संदर्भों में इसे करके देखना।

Course Outcome:

1. छात्राध्यापकों में शिक्षण और अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार की समझ बनाना।
2. चिन्तन की प्रक्रिया को समझना। विभिन्न सिद्धांन्ता/ परिप्रेक्ष्यों के माध्यम से बच्चों में अधिगम को समझना, जो उनके शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रतिबिम्बत हों।
3. विकास और सार्वभौमिक सस्कृति विभिन्न सिद्धान्त/परिप्रेक्ष्य के योगदान को संपूर्ण रूप से समझना।
4. बच्चों को ध्यान में रखकर सिद्धान्तों को लागू करना/छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना जिसमे वे सिद्धांत और वास्तविक जीवन में बच्चों की अंतःक्रिया में संबंध स्थापित करें।
5. सीखने और सिखाने की प्रक्रिया को समझना।
6. शिक्षा के सिद्धान्तों को समझते हुये छात्र–शिक्षकों को शिक्षण में सक्षम करना।
7. उन कारकों की समझ बनाना जो सीखने में सुविधा प्रदान करते हैं।
9. सीखने के सिद्धान्तों को समझने के लिए छात्र शिक्षक को सक्षम बनाना और उन्हें पाठ्यक्रम नियोजन और पाठ्यक्रम अंतरण के लिए निहितार्थ करना।

Student Learning Outcomes (SLO):

संज्ञानात्मक एवं सम्प्रत्यात्मक विकास की अवधारणा तथा सीखने के संदर्भ मे इसके सैद्धांतिक आधारों का विश्लेषण करना।

1. सीखने की योग्यता एवं निर्योग्यता (डिसेबिलिटी) की समझ विकसित करना।
2. सीखने का एवं सीखने के लिए आकलन का विश्लेषण करना।
3. सीखने के कुछ आरम्भिक सिद्धांतों से अवगत होना तथा उनकी आलोचनात्मक समझ बनाना।
4. सीखने–सिखाने की प्रक्रिया मे समाज की क्या भूमिका होती है, इसकी समझ बनाना।
5. सीखने को प्रभावित करने वाले कारक की आलोचनात्मक समझ बनाना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	अधिगम की अवधारणा एवं प्रक्रिया (Concept and process of Learning) अधिगम : अधिगम की अवधारणा एवं प्रकार (गैंग्ने का वर्गीकरण) • बच्चों के सीखने की प्रक्रिया : अधिगम एंव स्मृति में सुधार, स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति। • अधिगम एवं स्मृति : स्मृति संग्रहण, अवहेलना, विस्मृति, अधिगम का हस्तांतरण व्यवहार के आधारभूत सिद्धान्त एवं शैक्षिक निहितार्थ। • अधिगम की कड़िनाईयों की अवधारणा एवं प्रकार। • सीखने में व्यक्तिगत और सामाजिक सांस्कृतिक विविधता।	15Hrs

UNIT - II	बचपन में अवधारणा निर्माण एवं चिंतन प्रक्रिया (Concept Formation and thinking childhood) अवधारणा निर्माण : • अवधारणा का अर्थ : अवधारणा निर्माण में होने वाली मानसिक प्रक्रियाएँ। • बचपन में अवधारणाओं के विकास को प्रभावित करने वाले कारक। • समय, स्थान, कार्य–कारण एवं स्वयं, की अवधारणाओं का विकास। • अवधारणा अधिगम का ब्रूनर मॉडल। • पियाजे का मानसिक विकास का सिद्धांत, पियाजे और अन्य मनोवैज्ञानिकों के अवधारणा निर्माण के बारे में विचार। चिंतन एवं तर्क : • चिंतन की अवधारणा एवं प्रकृति। • चिंतन के साधन : ध्यान प्रत्यक्षीकरण, छवि, अवधारणा, प्रतीक, चिन्ह, सूत्र। • चिंतन में अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ। • चिंतन एवं अधिगम के बीच संबंध।	19Hrs
UNIT - III	संज्ञान एवं अधिगम (Cognition and Learning) • निर्माणवाद : अवधारणा का परिचय, पियाजे का सिद्धान्त, अधिगम क्या है, संज्ञानात्मक विकास की संरचनाएं एवं प्रक्रियायें, विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक द्वंद्व के लक्षण, शिक्षण अधिगम के संदर्भ में इसका महत्व। • वायगोत्सकी का सिद्धान्त : परिचय, सामान्य अनुवांशिकता संबंधी नियम, जेडपीडी (च्क्द्ध की अवधारणा, विकास में उपकरण और प्रतीक, शिक्षण के संदर्भ में इसका महत्व। • सूचना संप्रेषण उपागम : मस्तिष्क की बुनियादी बनावट (कार्यकारी स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति, अवधान, कूटरचना (encoding) एवं पुनर्प्राप्ति (retrieval), मुखर स्मृति (declarative memori) में बदलाव के रूप में ज्ञान की रचना एवं अधिगम, स्कीमा परिवर्तन या अवधारणात्मक परिवर्तन, किस तरह ये एक सतत् चलन में विकसित होते हैं। • संज्ञान में वैयक्तिक एवं सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर : अधिगम कठिनाईयों को समझना, बहिष्करण एवं समावेशन की स्थितियां एवं प्रभाव।	19Hrs
UNIT - IV	**भाषा एवं सम्प्रेषण** (Language and Communication) • बच्चे किस तरह संप्रेषण करते हैं? • भाषा विकास के संबंध में दृष्टिकोण : किस प्रकार बच्चे इसे सीखते हैं। (बच्चे शुरुआती उम्र में किस तरह भाषा सीखते हैं, के संदर्भ में) • प्रारंभिक आयु में भाषा। • स्किनर का सक्रिय अनुबंध का सिद्धांत सामाजिक अधिगम के बारे में बन्डूरा और वाल्टर का सिद्धान्त। जन्मजातवादी – चोम्स्कीवादी (Nativist-Chomskian) का दृष्टिकोण। • व्यवहारवाद की समालोचना की दृष्टि से इन सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों की तुलना। • भाषा के उपयोग : बातचीत में भागीदारी, संवाद, वार्तालाप करना और सुनना। • भाषा में सामाजिक सांस्कृतिक विविधता : उच्चारण, संवाद में अंतर, भाषायी विविधता, बहु सांस्कृतिक कक्षा के लिए इसका महत्व। • द्विभाषी एवं त्रिभाषी बच्चे : शिक्षकों के लिए इसका महत्व– बहुभाषिक कक्षा, शिक्षण विधि के रूप में कहानी कहना।	19Hrs
UNIT - V	खेल, स्व एवं नैतिक विकास (Play, Self and Moral Deveopment) खेल का अर्थ, विशिष्टतायें एवं प्रकार। • खेल एवं इसके कार्य : बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक, भाषा व स्नायु विकास (motor development) से इसका सम्बन्ध, बच्चों के खेल में सांस्कृतिक एव सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव। • खेल एवं समूह गतिकी की अवधारणा (group dynamics) : खेलों के नियम; बच्चे किस तरह मतभेदों को सुलझाना एवं निपटाना सीखते हैं। • स्वयं का बोध; स्व–विवरण, स्वयं की पहचान, स्वाभिमान का विकास, सामाजिक तुलना, आत्मसात करना एवं स्व–नियंत्रण। • नैतिक विकास : इस संदर्भ में कोलबर्ग एवं कैरोल गिलिगन्स का नैतिक विकास के समालोचनात्मक विचार।	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

- बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा विनोद मंडल
- भटनागर, सुरेश (तृतीय सस्करण), शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, दिल्लीः आर. एल. बुक डिपो
- भटनागर,वी (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, आर.एल. बुक डिपो
- जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण) बाल मनेविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- मंगल, एस. के. (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा पी. एच. आई. लर्निगं पी. एल.
- माथुर एस. एस. (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- पाठक, पी. डी. (चालीसवां संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान आगरा विनोद पुस्तक मंदिर
- शर्मा, आर. (प्रथम संस्करण) शिक्षा अधिगम मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो
- शर्मा, वी. (पंचम संस्करण) अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान, मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो
- वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण) बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान डॉ. एस. पी. गुप्ता, डॉ. अलका गुप्ता
- गिजुभाई बधेका – प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षा
- गिजुभाई बधेका – बाल शिक्षण जैसे मैंने समझा
- गिजुभाई बधेका –, चलते – फिरते।
- Mind in Society - Lev Vygotsky (Published by Harvard university press)
- Educational Psychology o" Kelly
- Educational Psychology, S.K. Mangal
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)

EKLAVYA UNIVERSITY
ज्ञान प्राप्तये लक्ष्य संधानम्

School of Education & Library Science

SYLLABUS II Year

Diploma In Elementry Education					
Course Code	समाज शिक्षा और पाठ्यचर्या बोध Understanding of Society, Education and Curriculum	L	T	P	C
DELED20Y202		4	2	0	6
Pre -requisite	Nill	Syllabus version			
		100 Marks			

Course Objectives:

छात्राध्यापक को शिक्षा के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से परिचित कराता है, जिससे वे शिक्षा के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विमर्श व तथ्यों की पड़ताल कर सकें। वर्तमान समय की जरूरत है कि समाज व शिक्षा के अंतर्संबंधों को समझा जाये जिससे समाज में व्याप्त असमानता व संघर्ष के मुद्दों के साथ निपटा जा सके। न्याय, समानता, स्वतंत्रता, मानवीय गरिमा व विविधता को सम्बोधित किया जा सके। शिक्षा के उद्देश्यों, प्रक्रियाओं व प्रचलित पद्धतियों की जब हम एक दार्शनिक व ऐतिहासिक समझ बनाते हैं तो हमें शिक्षा, ज्ञान और सत्ता के बीच का संबध समझ में आता है।

Course Outcome:

शिक्षा का अर्थ, उद्देश्य एवं महत्व को समझना

- शिक्षा के दार्शनिक, सामाजिक और ऐतिहासिक आयामों की समझ विकसित करना।
- ज्ञान, शिक्षार्थी, शिक्षक और शिक्षा के बारे में लंबे समय से प्रचलित धारणाओं की पड़ताल करना और एक अर्थपूर्ण समझ विकसित करना।
- छात्राध्यापकों को अलग अलग तरह की विचारधारा व दृष्टिकोण से परिचित कराना जिससे वे एक सुरक्षित, समतावादी और सीखने सिखाने का एक अच्छा माहौल तैयार कर सकें।

Student Learning Outcomes (SLO):

1. बच्चे और बचपन से सम्बंधित विभिन्न परिप्रेक्ष्यों की समझ को विकसित करना।
2. बचपन को आकार देनेवाले ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक कारको की भूमिकाओं को समझना।
3. विद्यालय की भूमिका को समाजीकरण के संदर्भ मे विश्लेषित करने की समझ बनाना।
4. शिक्षा और ज्ञान के अवधारणा की समीक्षात्मक समझ विकसित करना।
5. भारतीय चिंतकों की शैक्षिक रचनाओं के आधार पर उनकी शैक्षिक विचारों से अवगत होना तथा समकालीन परिदृश्य मे उन विचारो की सार्थकता की समीक्षा करना।
6. पाठ्यचर्या की समझ और स्थानीय पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व की समझ बनाना।

Unit	Syllabus	Periods
UNIT - I	शिक्षा की दार्शनिक समझ (Philosophical Understanding of Education) • मानव समाज में शिक्षा की प्रकृति और उसकी आवश्यकता एवं महत्व • विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा के बीच संबंध और मानव समाज में विविध शैक्षिक प्रक्रियाओं की जांच पड़ताल • विभिन्न पश्चिमी एवं भारतीय विचारकों के द्वारा विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा पर विचार : रूसो, ड्यूवी, मॉन्टेसरी, गांधी, टैगोर, गिजुभाई, अरविन्दो, • मानव प्रकृति, समाज, अधिगम और शिक्षा के उद्देश्य के बारे में मूलभूत धारणाओं की समझ • सीखने में व्यक्तिगत और सामाजिक सांस्कृतिक विविधता।	15Hrs

UNIT - II	शिक्षा के उद्देश्य **(Aims of Education)** शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य (उद्देश्य एवं मूल्य) • सामाजिक बदलाव एवं सामाजिक रूपांतरण के लिए शिक्षा • निम्नांकित बुनियादी अवधारणाओं को बच्चों की शिक्षा के संबंध में समझना अ. सामाजिक विषमता और समानता, संसाधनों के बंटवारे, अवसरों एवं बुनियादी जरूरतों की उपलब्धता में असमानता और समानता ब. समता स. गुणवत्ता द. अधिकार एवं कर्तव्य, शाला प्रबंध समिति का गठन, प्रक्रिया एवं भूमिका ई. मानव एवं बाल अधिकार फ. सामाजिक न्याय : भारतीय संविधान की प्रस्तावना एवं उसकी मूलभूत अवधारणाएं, मौलिक अधिकारों	19Hrs
UNIT - III	शिक्षा, राजनीति एवं समाज (Education, Politics and Society) • ब्रिटिशकाल के दौरान भारत में शिक्षा । • भारतीय समकालीन शिक्षा : औपनिवेशिक विरासत की निरन्तरता में एवं उससे हटकर • वर्ग, जाति, लिंग एवं धर्मों के संदर्भ में वर्चस्व के पुनरुत्पादन में और हाशियाकरण को चुनौती देने में शिक्षा की भूमिका • शिक्षा की राजनीतिक प्रकृति • शिक्षक एवं समाज : शिक्षकों के स्तर का समालोचनात्मक आकलन	19Hrs
UNIT - IV	ज्ञान (Knowledge) • बच्चे में ज्ञान का निर्माण : गतिविधि एवं अनुभव से ज्ञान अर्जन करना • ज्ञान का स्वरूप एवं बच्चे ज्ञान का निर्माण कैसे करते हैं (ज्ञान और सीखना) • मान्यता, जानकारी, ज्ञान एवं समझ की अवधारणा • ज्ञान के प्रारूप : विविध प्रकार के ज्ञान एवं उनकी वैधता प्रक्रियायें • पाठ्यचर्या के चयन एवं निर्माण की प्रक्रियायें एवं मापदण्ड • देश /राज्य के विभिन्न पाठ्यचर्या की रूपरेखा जैसे (छ॰ 2005) • पाठ्यचर्या निर्माण और उसके विकास के उपागम • बच्चों का विकास एवं पाठ संबंधी अनुभवों का संयोजन • पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि एवं बच्चों का आकलन	19Hrs
UNIT - V	• पाठ्यचर्या के चयन एवं निर्माण की प्रक्रियायें एवं मापदण्ड • देश /राज्य के विभिन्न पाठ्यचर्या की रूपरेखा जैसे (छ॰ 2005) • पाठ्यचर्या निर्माण और उसके विकास के उपागम • बच्चों का विकास एवं पाठ संबंधी अनुभवों का संयोजन • पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि एवं बच्चों का आकलन	15Hrs

संदर्भ ग्रंथ सूची

- गिजू भाई बधेका (2001) – बाल शिक्षण और शिक्षक
- एस. शुक्ला एवं कृष्ण कुमार –शिक्षा का समाज शास्त्रीय संदर्भ –ग्रंथ शिल्पी
- जॉन ड्यूई (2009) – स्कूल और समाज – आकार प्रकाशन, चंडीगढ़
- जे. कृष्ण मूर्ति (2006) – शिक्षा पर कृष्ण मूर्ति के विचार कृष्ण मूर्ति फाउन्डेशन, वाराणसी
- रवीन्द्रनाथ ठाकुर (2004)– रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन – चेप्टर–1 एवं 7–ग्रंथ शिल्पी
- कृष्ण कुमार (2007) – शिक्षा और संस्कृति
- पाउलफेरे –उत्पीड़ितों का शिक्षा शास्त्र, ग्रंथ शिल्पी
- रोहित धनकर –शिक्षा और समाज, आधार प्रकाशन, चंडीगढ़
- एन.सी.ई. आर. टी–राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पत्र : 1, शिक्षा के उपलक्ष्य 2. पाठ्यचर्या , पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकें।
- छत्तीसगढ़ डी. एड. पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष – ज्ञान, शिक्षा क्रम एवं शिक्षा शास्त्र चेप्टर– 2,5 एवं 6
- गिजुभाई बधेका– शिक्षकों से
- गिजुभाई बधेका– मॉनेसरी पद्धति
- (http://www.tess-india.edu.in/ में OER एवं वीडियो)
- Krishnamurti, J. (2006). Krishnamurti on Education. Part I: Talks to Students: Chapter 1: On Education, Chapter 4: On Freedom and Order, Part II: Discussion with Teachers: Chapter i: On Right Education. Chennai: Krishnamurti Foundation of India.

• Saxena, Sadhana (2007). 'Education of the Masses in India: A Critical Enquiry'. In Krishna Kumar and Joachim Oesterheld

• Thakur, R. (2004). Ravindranath ka Shikshadarshan. Chapter i: Tote ki Shiksha.Chapter 7: Aashram Shiksha, New Delhi: Granthshipli.